खण्ड-248, अंक-6
गुरूवार, 6 चैत्र, शक संवत् 1886
(26 मार्च, 1964 ई0)

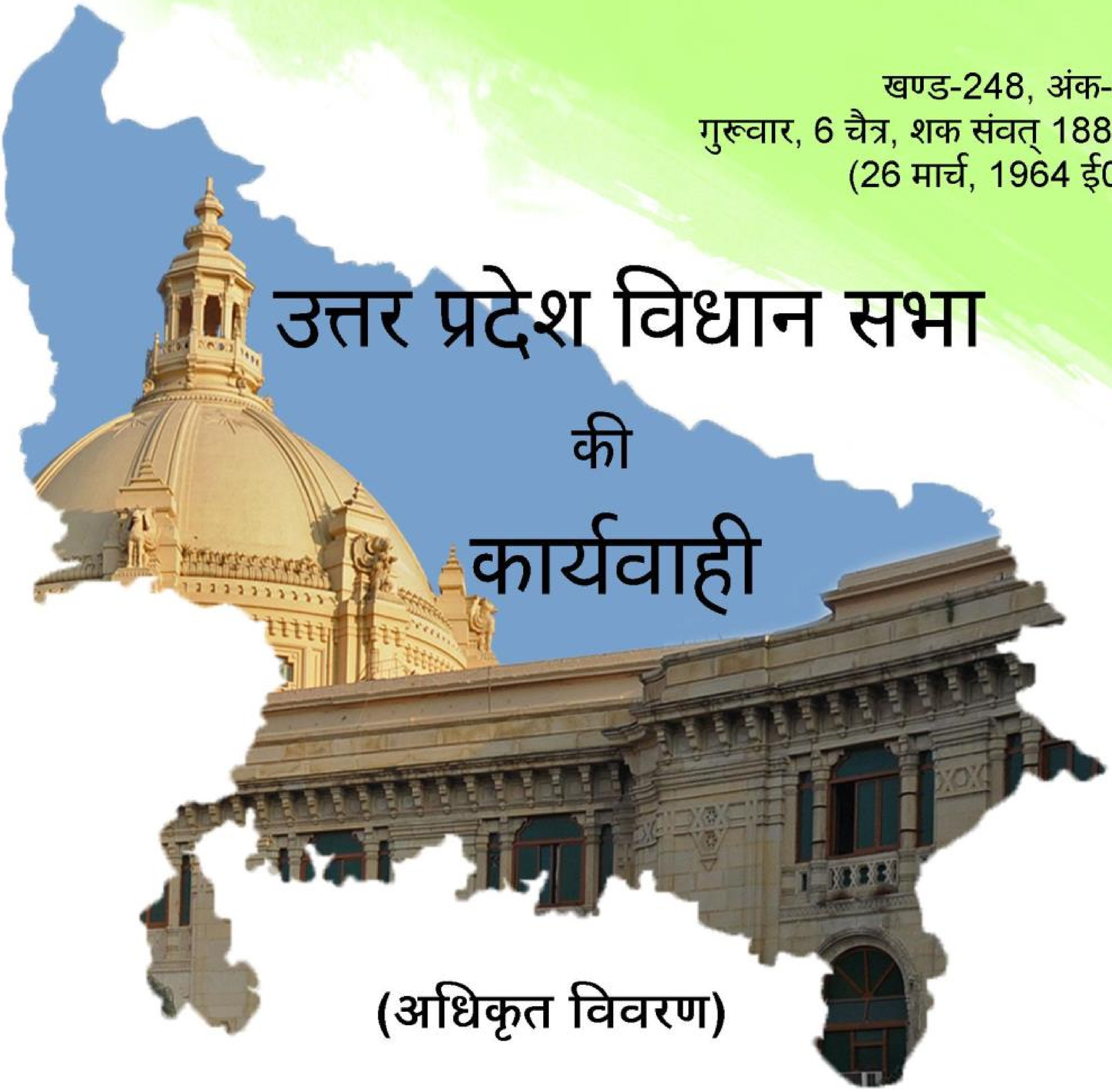

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 248 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)
१९६४

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	४८३–४८७
श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह के निधन पर शोकोद्गार	४८७–४९३

विधान सभा पुस्तकालय

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बृहस्पतिवार, २६ मार्च, १९६४

विधान सभा की बठक सभा-मंडप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री मदनमोहन वर्मा की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।

उपस्थित सदस्य—४०१

अक्षयवरसिंह, श्री
अखण्डप्रतापसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल बशीर खां, श्री
अब्दुल समी, श्री
अब्दुल हसीब खां, चौधरी
अमजद अली, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधनारायणप्रतापसिंह, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अवेद्यनाथ, श्री
अशरफ अली खां, श्री
अहमद बख्श, श्री
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासनसिंह, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
उग्रसेन, श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उल्फतसिंह यादव, श्री
ऊदल, श्री
ऋषिनारायण शास्त्री, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ओंकारनाथ द्विवेदी, श्री
कन्धईलाल, श्री
कन्हैयालाल , श्री
कमलासिंह यादव, श्री
कलारानी मिश्रा, श्रीमती
कल्पनाथसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री (उपनाम छुन्नन गुरु)
कल्याणराय, श्री
काशीनाथबहादुर पाल, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किशोरीलाल अग्रवाल, श्री
किश्वर आरा, बेगम
कृष्णचन्द, श्री
कृष्णसिंह, श्री
कृष्णा, श्री
कृष्णानन्दराय, श्री
केदारनाथ भार्गव, श्री
केशभान, श्री
केशरीप्रसाद पांडेय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशवराम, श्री
केशवसिंह, श्री
कैलाश, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खयालीराम, श्री
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री
गंगाप्रसादसिंह, श्री
गंगासिंह विष्ट, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

गणेशप्रसाद, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरधारीलाल, श्री (वाराणसी)
गिरवरप्रसाद, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गेंदादेवी, श्रीमती
गेंदासिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपीनाथ दीक्षित, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्दनसिंह, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रबलीसिंह, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चुन्नीलाल, श्री
चैतन्यराजसिंह, श्री
छत्रपति अम्बेश, श्री
छांगुर, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
छोटेलाल पालीवाल, श्री
जगदम्बाप्रसाद, श्री
जगदीशनारायण सिनहा, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (बहराइच)
जगदीशप्रसाद, श्री (मुरादाबाद)
जगदीशप्रसाद पांडेय, श्री
जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ राव, श्री
जगन्नाथसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जगवीरसिंह, श्री
जमादारसिंह, श्री
जमीलुर्रहमान किदवई, श्री
जयगोपाल, श्री
जयराम वर्मा, श्री
जलील अब्बासी, काजी
जसरामसिंह, श्री
जियाउर्रहमान, श्री (उपनाम वक्कन)
जुगलकिशोर, श्री
जुगलकिशोर, आचार्य
जेड० ए० अहमद, श्री
जे० पी० मिश्र, श्री
ज्वालाप्रसाद, श्री
झारखण्डेराय, श्री
झिलमिटराम, श्री
टम्बेश्वरप्रसाद, श्री
डल्लाराम, श्री
डूंगरसिंह, श्री
तमेश्वरप्रसाद, श्री
तारा अग्रवाल, श्रीमती
तेजनारायण त्रिवेदी, श्री
तेजभानसिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
त्रेपनसिंह, श्री
दयाराम शाक्य, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दाऊदयाल खन्ना श्री
दीनदयाल करवरिया, श्री
दीपनारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवीदत्त, श्री
देवेन्द्रसिंह, श्री
देशराजसिंह, श्री
दौलतलाल, श्री
द्वारकाप्रसाद पाण्डेय, श्री
द्विजेन्द्रनारायण, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
धूमप्रसाद, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नत्थूसिंह, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरदेवसिंह, श्री
नरसिंहनारायण पाण्डेय, श्री
नरेन्द्रसिंह, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री
नवरंगसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री

नाथूराम शिक्षक, श्री
नारायणसिंह, श्री
नित्यानन्द पाण्डेय, श्री
नियाज़ हसन खान, श्री
नियामतुल्ला अन्सारी, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौनिहालसिंह चौधरी, श्री
नौरंगलाल, श्री
पंचमदास, श्री
परमाईलाल, श्री
पशुपतिनाथसरनसिंह, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पितईराम, श्री
पीतमसिंह प्रधान, श्री
पुरुषोत्तमलाल बधवार, श्री (राजाजी)
पूरनलाल, श्री
प्यारेलाल मिश्र, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रेमसिंह, श्री
प्रेमसुन्दर, श्री
फूलसिंह, श्री
बंकटासिंह ,श्री (टुन्नूसिंह)
बंशीधर पाण्डेय, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बंशीलाल, श्री
बद्रीप्रसाद, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बनवारीलाल विप्र, श्री
बनारसीदास, श्री
बब्बनसिंह, श्री
बलदेवसिंह, सरदार
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवानसिंह, श्री
बलवीरसिंह, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बसन्तसिंह, श्री
बांकेलाल, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य, श्री
बालेन्दुभूषणप्रतापसिंह, श्री
बालोजी अग्रवाल, श्री
बिपिनबिहारी तिवारी, श्री
बिशनलाल यादव, श्री
बृजबिहारी, श्री
बृजभूषणशरण, श्री
बृजमोहनलाल गुप्त, श्री
बृजराजसिंह, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बृजेश्वरसहाय, श्री
बेचनराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजनाथसिंह वैद्य, श्री
बैजूराम, श्री
ब्रह्मदत्त मायर, श्री
भगवानदास यादवेन्दु, श्री
भगवानदीन, श्री
भगवानसहाय, श्री
भगौतीदीन, श्री
भानुप्रतापसिंह, श्री
भोखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
भूपसिंह, श्री
मंगल, श्री
मंगलदेव, श्री
मंगलप्रसाद आर्य, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मनसाराम, श्री
मन्नालाल, श्री
महमूद हसन खां, श्री
महावीरप्रसाद, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीरसिंह, श्री
महेन्द्रसिंह, श्री
महेशसिंह, श्री
माताप्रसाद, श्री
माधोनारायण मुद्गल, श्री
माधोप्रसाद त्रिपाठी, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मुकन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुमताज मुहम्मद खां, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुलतानसिंह, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मुहम्मद हुसैन, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मेघनाथसिंह शिशोदिया, श्री
मेवालाल जायसवाल, श्री
मेड़ीलाल, श्री
मोहनलाल , आचार्य
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनलाल वर्मा, श्री
मोहनसिंह, श्री
यशपालसिंह वर्मा, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लन जी)
योगेश्वरप्रसाद खंडूड़ी, श्री
रक्षपालसिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीर, श्री
रघुवीरसहाय कैथवार, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रणबहादुरसिंह, श्री
रतीपाल, श्री
रमाकान्तसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथसिंह, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण मिश्र, श्री
राजनारायणसिंह, श्री
राजाराम, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम शर्मा, श्री
रामअधार कनौजिया, श्री
रामअधीनसिंह, श्री
रामअनन्त पांडेय, श्री
रामअवध, श्री
रामआसरे, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर त्रिपाठी, श्री
रामकिशोर वर्मा, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामचन्द्रसिंह, श्री
रामचरण शाह, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामपालसिंह, श्री
रामप्यारे, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
रामरूपसिंह, श्री
रामलखन वकील, श्री
रामलखन शुक्ल, श्री
रामलखनसिंह, श्री
रामलाल, श्री
रामसमझावन, श्री
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसिंह, श्री (सहारनपुर)
रामसुन्दर पाण्डेय, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामेश्वरनाथ, श्री (उपनाम चौबे)
रियासत हुसैन, श्री
रुकुमसिंह राठौर, कुंवर
रुद्रप्रतापसिंह, कुंवर
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लखपतराम शर्मा, श्री
लखीसिंह, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री (जौनपुर)
लालबहादुरसिंह, श्री (वाराणसी)
लोकपालसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नकवी, श्री
विक्रमशाह, राजा
विजयकुमार, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकर, श्री
विजयशंकरसिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्वनाथ पांडेय, 'प्रणव', श्री
विश्वनाथप्रसाद, श्री
विष्णुप्रतापसिंह, श्री
वीरसेन, श्री
वैजनाथ पांडेय, श्री

शंकरलाल, श्री
शकुन्तलादेवी, श्रीमती
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषणसिंह, श्री
शान्तिचन्द्र शुक्ल, श्री
शान्तिप्रपन्न शर्मा, श्री
शारदानन्द, श्री
शारदाभक्तसिंह, श्री
शिब्बनलाल सक्सेना, श्री
शिवचरण, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवनाथसिंह, श्री
शिवमंगल, श्री
शिवमूर्ति, श्री
शिवराजसिंह, श्री
शिवसम्पति शर्मा, श्री
शिवेन्द्रप्रताप, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
शुगनचन्द शर्मा, श्री
शौकत हमीद खां, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर शुक्ल, श्री
श्रद्धादेवी, कुमारी
श्रीपति मिश्र, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
श्रीराम, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद , श्री
सत्यदेव, श्री
सत्यनारायण पांडेय, श्री
सत्यवीर कुंवर, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सरदारसिंह, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सालिग्राम जैसवाल, श्री
सियादुलारी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, डाक्टर
सीताराम, डाक्टर
सुक्खनलाल, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुचेता कृपालानी, श्रीमती
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजनराम विशारद, श्री
सुरेन्द्रदत्त बाजपेयी, श्री
सुरेन्द्रविक्रम, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सूबेदारसिंह, श्री
सूरजपालसिंह यादव, श्री
सूरजलाल गुप्त वकील, श्री
सेवाराम, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिगैनराम, श्री
हरिनाथ तिवारी एडवोकेट, श्री
हरीदत्त काण्डपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन, श्री
हिम्मतसिंह, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हतरामसिंह, श्री
हेमराज, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होतीलाल अग्रवाल, श्री

नोट—गृह मंत्री, श्री हरगोविन्दसिंह तथा गृह उप-मंत्री, श्री शिवप्रसाद गुप्त भी उपस्थित थे ।

श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मंत्री (श्रीमती सुचेता कृपालानी)—

अध्यक्ष जी, मुझे आज सदन को एक बहुत दुःखद समाचार देना पड़ रहा है कि हमारे आदरणीय सदस्य, श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह जी, स्वतंत्र पार्टी के नेता, की कल रात मृत्यु हो गई । वह कई दिन से अस्पताल में बीमार थे और हम समझ रहे थे कि उनकी हालत ज्यादा शोचनीय है, तो मैं उन्हें देखने गई थी । उसके बाद यह समाचार मिला कि उनकी दशा धीरे-धीरे सुधर रही है

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्रीमती सुचेता कृपालानी]

और हम आशा करते थे कि वह ठीक हो जायेंगे। मगर उनकी हालत ज्यादा खराब होकर कल रात को उनका अन्त हो गया।

वह हमारे कांग्रेसवालों के स्वतंत्रता संग्राम के पुराने साथी थे। जिस समय बड़े-बड़े ताल्लुकेदार ब्रिटिश सरकार का साथ देते थे, ये इतना अधिक देश-प्रेम और साहस तथा उत्साह अपने दिल में रखते थे कि इन्होंने उस समय उनके विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठाया। चार बार उन्हें कारावास हुआ। डंडी मार्च में वह महात्मा गांधी के साथ रहे, नमक कानून भंग करते समय भी उनके साथ रहे। देश की स्वतंत्रता और उन्नति में इनकी बहुत सेवा रही। वह एक उन्नतिशील कृषक थे और अपनी प्रजा को उन्नति के काम सिखाते थे और चाहते थे कि उनकी उन्नति हो।

आज उनके लिये हम सब लोग शोक प्रकट करेंगे और समझेंगे कि हमारी भारत माता का एक सेवक और देश-प्रेमी हमारे बीच से चला गया है। उनकी नम्रता, मित्रता और सुन्दर व्यवहार हम सबको याद रहेंगे। १९३७ से लगातार वह इस सदन के सदस्य रहे हैं। हम सब उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति दे और उनके संतप्त परिवार को इस दुःख को बर्दाश्त करने की शक्ति दे।

साथ ही मैं यह कहना चाहती हूं कि आज हम कोई कार्य न करें। आज उनके शोक में सदन बन्द रहे। २८ तारीख को १० बजे से इस सदन की कार्यवाही शुरू हो जाय।

*श्री शारदाभक्तसिंह (जिला हरदोई)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय राघवेन्द्रप्रतापसिंह के निधन पर जो भावनायें माननीया मुख्य मंत्री जी ने व्यक्त की हैं, उनसे मैं अपने को और अपने सारे विरोधी दल को सम्बद्ध करता हूं।

हम लोगों से उनका इतना निकट और आत्मीयता का सम्बन्ध था कि उनके इस दुःखद समाचार को सुनकर मैं और मेरा दल बहुत दुःखी हुआ। वह अधिक बात नहीं करते थे, लेकिन काम अधिक करते थे। उनकी गम्भीरता और आत्मीयता के बारे में हम सबको व्यक्तिगत परिचय है। उनके निधन से जो क्षति प्रदेश को हुई है उसे प्रत्येक सदस्य अनुभव करता है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके संतप्त परिवार को मेरी और सारे विरोधी दल की ओर से आप समवेदना पहुंचा दें और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति मिले और उनके दुःखी परिवार को ईश्वर शक्ति प्रदान करे कि वे इस दुःख को सहन कर सकें।

मैं भी इसका समर्थन करता हूं कि आज कोई और काम नहीं होना चाहिये।

*श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)—

श्रीमन्, मैं भी अपने विचार और अपने दल के विचारों को माननीया मुख्य मंत्री जी के विचारों से संबद्ध करता हूं। इस हाउस की एक बहुत बड़ी शक्ति हमसे छिन गयी। राजा साहब राघवेन्द्रप्रतापसिंह जी उच्च विचारों और विशाल दिल वाले व्यक्ति थे। उनके निधन से मुझे निजी दुःख है, क्योंकि वे मेरे पास बैठा करते थे। उनकी निजी दिनचर्या में भी देश-भक्ति की स्पष्ट झलक होती थी।

श्रीमन्, इस देश में बहुत कम व्यक्ति ऐसे हैं जो राजा, महाराजों के खानदान में पैदा हुए और पले हों, विलायत के अन्दर रहे हों और जिनका ऐसा जीवन हो। जब वे विलायत में पढ़ते थे, तब एक अंग्रेज लड़के ने उनसे यह कह दिया कि तुम्हारे देश में संघर्ष छिड़ा है और तुम यहां हो, बस वे पढ़ाई छोड़ कर चले आये और यहां आकर गांधी जी से मिले, घरवालों से विद्रोह कर दिया, घर वाले भी उनसे नाराज हो गये। वह एक इतनी बड़ी शक्ति हमारे बीच

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

से उठ गयी है कि उनके निधन ने हमको एकबारगी झकझोर दिया है। मैं अपनी और अपने दल की ओर से उस महान् शक्ति के लिये समवेदना प्रकट करता हूं। आप मेरी और मेरी पार्टी की भावनाएं उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज लखनऊ आने पर रेलवे स्टेशन पर जब यह समाचार मैंने सुना तो मुझे बड़ा दुःख हुआ। राजा राघवेन्द्रप्रतापसिंह जी से मेरा पिछले २५ वर्षों का सम्बन्ध था। मैंने उनको पहले पहल आचार्य नरेन्द्रदेव जी के यहां देखा था। राजा और रियासत उनकी बागी हो गयी थी। वे केवल मोटा खद्दर ही पहनते थे, जिसका रियासत में सब लोग मजाक उड़ाते थे। उस समय मनकापुर में, मैं व वे दो ही व्यक्ति थे जो खद्दर पहनते थे। दरबार में सब लोग कांग्रेस को गालियां देते थे, मगर राजा कभी उस दरबार में बैठता न था। इनको मनकापुर कोर्ट से निकाल दिया गया और मंगल भवन में जाकर रहना पड़ा। मुझे यह भी याद है कि रानी साहिबा को बैठने के लिये कुर्सी भी नहीं थी। मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ। जब ये विलायत से लौट कर आये तो इनके पिता जी ने कह दिया कि राघवेन्द्र, तुमको कोई रियासत न मिलेगी। उनके बाद बड़े भाई राजा हुए, लेकिन जब वे भी ला औलाद मरे, तब इनको रियासत मिली।

इन पर आचार्य जी की बड़ी कृपा रहती थी। ये वालेंटियरों का कैम्प लगाते थे। उस कैंप में आचार्य जी चाहे जितनी खांसी होती, लेकिन अवश्य आते थे। जब मैं हिन्दू यूनिवर्सिटी में पढ़ता था तो २२ अगस्त के सत्याग्रह का समय था। मनकापुर जब आया तो वहां देखा कि अंग्रेज एस० पी० और डिप्टी कमिश्नर ने, कोर्ट पर जो तिरंगा झंडा लगा था उसको खींचकर जूतों से रगड़ा, लेकिन राजा नहीं मिला, वह फरार था। उसने राजा काला-कांकर से बहुत राष्ट्रीय भावनाओं को लिया, उनकी बहुत बड़ी छाप हमारे राजा साहब, मनकापुर पर पड़ी थी और आचार्य नरेन्द्रदेव के साथ रह कर उनकी यह देश-प्रेम की भावना काफी परिपुष्ट हो गयी थी।

किसानों के बीच में वे बराबर जाते थे। वे इतने मेहनती थे कि बारिश हो रही है और वे फार्म के चारों तरफ घूमते हुए दिखलायी देते थे। इतना मेहनती तो मैंने किसी खेतिहर को भी नहीं देखा है। मैंने मजीठिया जी और सरदार योगेन्द्रसिंह का भी फार्म देखा है, लेकिन राजा राघवेन्द्रप्रतापसिंह जी के फार्म का क्या कहना। भेड़ों का पालना, सुअरों का पालना, मवेशियों को पालना—इनसे सम्बन्धित सारे कार्य वे व्यक्तिगत रूप से देखते थे। वे कुर्सी पर बैठे हुये हैं और भेड़ों के बाल काटे जा रहे हैं, आम फले हैं तो बगीचे की रखवाली वे कर रहे हैं और खाने-पीने में इतनी सादगी कि भूख लगने पर जो चीज भी सामने रख दी गयी, उसे खा लिया और काफी पानी पी लिया। वे पानी इतना ज्यादा पीते थे कि पानी से उनका कुर्ता तक भीग जाता था। इस तरह की तो उनकी जिन्दगी थी। अभी हाल में उनकी कोठी पर एक आदमी के साथ उनसे मिलने गया था तो उनको भोजन करते देख कर मैंने कहा कि आपकी तो अभी वही पुरानी आदत है, तो उन्होंने कहा हां, सुबह जो मिल गया सो मिल गया, फिर १२ बजे रात के पहले कुछ नहीं मिलेगा।

सन् ३७,३८,४०,४१,४२ में तथा जब मैं बम्बई में था उसके पहले भी राजा मनकापुर ने मुझे बराबर शरण दी। मैं मनकापुर में देखा करता था कि जब भी राज की तरफ से कोई जशन होता था उसमें राजा राघवेन्द्रप्रतापसिंह भाग नहीं लेते थे। वे बराबर मोटे खद्दर का एक कुर्ता व पायजामा पहना करते थे। उनको अच्छे किस्म का खद्दर पहनते हुये मैंने कभी नहीं देखा। सादगी यह कि नौकर ने सुबह जो कपड़ा निकाल कर रख दिया उसे ही पहना करते थे, दूसरा कपड़ा नहीं पहनते थे। राजा का लड़का होते हुये भी जनता की सेवा करने की भावना उनको स्वर्गीय राजा अवधेशप्रतापसिंह से मिली थी। बड़ा अफसोस है कि आज जब इस प्रदेश को उनकी सेवा की आवश्यकता थी, वे हमारे बीच में नहीं रहे।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री उग्रसेन]

मैं अपनी तरफ से तथा सोशलिस्ट पार्टी की तरफ से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी शोक समवेदना व सहानुभूति उनके शोक संतप्त परिवार के पास भेजने की कृपा करें। मैं उस परिवार को १५-१६ वर्षों से जानता हूं और इस बात को समझता हूं कि आज मनकापुर कितना शोक संतप्त होगा। मैं फिर अपनी तथा अपनी पार्टी की तरफ से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

*श्री जेड० ए० अहमद (जिला आजमगढ़)--

अध्यक्ष महोदय, आज हमारे सदन का एक बहुत बड़ा सतून गिर गया। हम सबने माननीय राजा राघवेन्द्रप्रतापसिंह को किसी पार्टी विशेष का लीडर नहीं समझा, बल्कि उन्हें अपना कुलीग, अपना साथी, अपना भाई और अपना कामरेड समझा। और उन्होंने भी अपनी सियासी जिन्दगी में कभी उस तंगनजरी से काम नहीं किया जिस तंगनजरी के हम सब शिकार हो जाते हैं।

तीन महीने पहले वे एकाएक दिल्ली में बीमार हो गये। मैं उस समय दिल्ली में ही था। वे मेरे बड़े पर्सनल दोस्त थे। हमने किसी न किसी तरह से उनको अस्पताल में पहुंचाया और वहां से वे यहां लाये गये। यहां बलरामपुर अस्पताल में इस तरीके से वे तीन-चार हफ्ते रहे। मैं हर दूसरे, तीसरे दिन उनसे मिलने जाया करता था और देखता था कि किस तरीके से यह शानदार इंसान अपनी जिन्दगी के लिये लड़ रहा है। सिर्फ जिन्दगी के लिये, लड़ने के लिये ही हर इंसान पैदा हुआ है और वह जिन्दगी के लिये ही लड़ रहा है, लेकिन वह इसलिये लड़ रहे थे कि वे हिन्दुस्तान की तरक्की के लिये, हिन्दुस्तान की बहबूदी के लिये और हिन्दुस्तान को आगे ले जाने के लिये कुछ न कुछ कंट्रीब्यूट करें। इसलिये जिन्दगी की वह कसमकश थी। उसी दौरान मुझसे बात होती थी तो वे कहते थे आ जाऊंगा, लेकिन मजबूरी है कि ला आफ नेचर ने अपना काम किया और आज वे हमारे दरमियान नहीं रहे।

मुझे याद है वह दिन जबकि राजा राघवेन्द्रप्रतापसिंह एक नौजवान की हैसियत से राष्ट्रीय आन्दोलन में आये। उनका ताल्लुक मरहूम रफी साहब से गहरा था और वे कई गिने-चुने खानदान से निकले थे। जिन खान्दानों में और जिन ताल्लुकेदार खान्दानों में बगावत की हवा फैली उनमें उन्होंने आगे बढ़कर, सब कुछ कुरबान कर के कफन सिर से बांध कर, मुल्क की आजादी के लिये अपनी दौलत, अपनी मिलकियत, अपनी जमींदारी, हर चीज को कुरबान करने के लिये वह आगे बढ़े। उस तबके के उस जमाने में जो नौजवान इस तरह से निकल कर आगे आये, मैं समझता हूं कि वह उंगलियों पर गिने जा सकते हैं और उन्हीं में से एक श्री राघवेन्द्रप्रतापसिंह जी थे।

वह आज हमारे लिये कुछ ट्रेडिशन्स छोड़ गये हैं, वह चले गये, लेकिन जो परम्परायें और रवायात वह छोड़ गये हैं वह हमेशा हमें रास्ता दिखायेंगी। देश की आजादी की तहरीक के उस बाब से उन का ताल्लुक है जबकि अंग्रेज मालदार लोगों को घसीट कर, बड़े-बड़े जागीरदारों को जोड़कर आजादी की तहरीक को कुचलने की कोशिश करते थे। उस वक्त उस तबके से, उस समाज से, एक नौजवान निकला और उस ने उन की पावरको डिफाई किया और अपनी जिन्दगी को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ दिया। उन की वह रवायात हमेशा जिन्दा रहेगी। उनके न रहने का हमें सख्त अफसोस और दुख है, लेकिन इसमें हम कर भी क्या सकते हैं, लेकिन हम यह इल्तजा जरूर करते हैं कि हमारी मोहब्बत भरी यादगारों के फूल उनके कदमों पर रखे जायं और हमारी इन मोहब्बत भरी यादगारों को उन के खान्दान वालों तक पहुंचाया जाय।

*श्री भानुप्रतापसिंह (जिला बस्ती)--

अध्यक्ष महोदय, मैं समझ नहीं पाता कि किन शब्दों में अपने हृदय की व्यथा को व्यक्त करूं। वह मेरे निकट सम्बन्धी थे, सम्बन्धी तो और भी बहुत से हैं, लेकिन जो प्रेम, जो लगाव

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जो श्रद्धा उनके प्रति मेरे मन में उत्पन्न हुई थी शायद आगे अब वैसी किसी के लिये न हो सके। वह ही मुझे राजनीति में लाये थे और जबकि मैं उन के सहारे से केवल अपने पैरों पर खड़ा होना सीख ही रहा था, वह मुझे बेसहारा छोड़कर चले गये। उनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जो उस समय की परम्परा के अनुसार ब्रिटिश हुकूमत का बहुत ही वफादार था, इतना वफादार था कि जब गोंडा और लखनऊ के बाजारों में विदेशी कपड़ा मिलना बन्द हो गया था उस समय उन के पिता कलकत्ता भेज कर विलायती कपड़ा खरीदवाते थे इसलिये चूंकि वह ब्रिटिश हुकूमत के वफादार थे, यद्यपि बाद में उनकी विचारधारा भी बदली और जब उन में भी राष्ट्रीय विचार-धारा आई तो उन्होंने अपने यहां महात्मा गांधी को भी निमंत्रित किया।

एक जमाने में उन के पिता अंग्रेजों के इतने बड़े वफादार थे कि उन्होंने इन को पढ़ने के लिये इंगलैण्ड भेजा और उस समय की परम्परा के अनुसार आई० सी० एस० की परीक्षा सर्वोच्च समझी जाती थी और उस को पास करने के विचार से यह लन्दन भेजे गये थे। एक दिन इन के एक अंग्रेज सहपाठी ने इन से इतना भर कह दिया कि, "तुम को शर्म नहीं आती, तुम हिन्दुस्तानी हो, तुम्हारे देश में राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहा है और तुम यहां अपना केरियर बना रहे हो।" इतना सुनने के बाद वह फौरन लन्दन से चल पड़े और घर न जाकर पहले सीधे महात्मा गाधी के पास जो उस समय करांची में थे, पहुंचे, और उन से कहा कि मैं आप की सेवा में आया हूं। जैसी महात्मा गांधी जी की बातें हुआ करती थीं, उन्होंने इन से कहा कि ठीक है, लेकिन पहले तुम जाकर अपने माता-पिता की अनुज्ञा ले लो उस के बाद आना। इस पर इन्होंने कहा कि मेरे माता-पिता तो कभी भी अनुज्ञा नहीं दे सकते, लेकिन फिर भी गांधी जी ने उन पर दबाव डाला और कहा कि जब तक तुम अपने माता-पिता को राजी नहीं करोगे मैं तुम्हें अपने साथ सत्याग्रह में नहीं लगा सकता। फिर वह गये, लेकिन जब उन के पिता ने उनकी यह राय सुनी तो उन से कहा कि तुम अंग्रेजों की जेल में तो बाद में जाओगे पहले ही उन को एक कमरे में बन्द करा दिया। ७–८ दिन तक उस में बन्द रहने के बाद वह एक दिन रात को अपनी बहिन की सहायता से कमरे से बाहर निकल गये और ट्रेन से फिर महात्मा गांधी जी के पास पहुंचे। उस समय तक महात्मा गांधी जी गिरफ्तार हो चुके थे और माननीया सरोजनी नायडू के नेतृत्व में धरसान सत्याग्रह चल रहा था और उन्होंने माननीया सरोजनी नायडू के नेतृत्व में पहली बार उस सत्याग्रह में भाग लिया। उस समय लाठी चार्ज हुआ और जो पुलिस के डंडे पड़े थे वह उनके शरीर पर अन्त तक बने रहे। उसके बाद उन्होंने अनेक बार राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया, सारे कष्ट भोगे। लेकिन कभी भी वह अपने उस पथ से डिगे नहीं। न केवल इस आन्दोलन में, बल्कि जो कुछ भी उन्होंने किया, इतने अच्छे ढंग से किया कि एक प्रकार से वह प्रकाश-पुंज थे।

खेती के विषय में जैसा माननीय उग्रसेन जी ने कहा, मैंने भी कई सरकारी और गैर-सरकारी फार्मों को देखा—यहां भी और विदेशों में भी, लेकिन जिस प्रकार वह खेती करते थे और एक ही दिशा में नहीं, पशुपालन में, दुग्ध उत्पादन में, सब में उनका इतना अच्छा प्रबंध था कि जो उन्होंने खेती के क्षेत्र में योगदान किया है वह सराहनीय रहेगा। ऐसे व्यक्ति के निधन पर जो कष्ट है वह मैं कैसे कहूं, केवल आप लोगों की सहानुभूति, सद्भावना ही हमारा सहारा है, ईश्वर हमें बल दे कि हम उनके चरण चिन्हों पर चल सकें।

श्री भगवानसहाय (जिला शाहजहांपुर)—

श्रीमन्, राजा राघवेन्द्रप्रतापसिंह इस सदन के बहुत पुराने और आदरणीय सदस्य थे। मेरा और उनका परिचय उस समय से हुआ था जब मैं १९५२ में यहां मेम्बर चुन कर आया था। पहले ही परिचय में हमें एक दूसरे के लिये लाइकिंग हो गई थी। राजा साहब एक बहुत बड़े ताल्लुकेदार घराने के लड़के होते हुये भी और उस वातावरण में पलते हुये जहां अंग्रेजों की वफादारी बुरी तरह से फैली हुई थी, फिर भी वह देश-प्रेम से प्रेरित हुए। हमारा उनका नाता केवल एक सदस्य का ही नहीं था, बल्कि वह राष्ट्रीय आन्दोलन में भी थे और जेल भी उन्होंने काटी थी, इस हिसाब से भी हमारा उनका सम्बन्ध था। उस जमाने के लिहाज से किसी बड़े ताल्लुकेदार

[श्री भगवानसहाय]

परिवार के लड़के का जेल में जाना बहुत बड़ी बात थी जिसको शायद आज के आदमी समझ न सकें ।

राजा साहब में दिल, दिमाग की दोनों खूबियां थीं । जैसा माननीय भानुप्रतापसिंह जी ने कहा कि वह बहुत कुशल खेती के जानने वाले थे । राष्ट्रीय आन्दोलन में उनका बहुत बड़ा भाग रहा, इस सदन में भी उनकी कार्यवाही ऐसी थी जिससे हम लोगों को प्रेरणा मिल सकती है । उनकी यादगार हमारे सब के दिलों में बहुत दिनों तक बनी रहेगी । मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी और मेरे दल की सहानुभूति उनके दुःखी परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री हलीमुद्दीन (जिला मुरादाबाद)--

अध्यक्ष महोदय, आज हमने अपने बीच में से एक कीमती इंसान खो दिया है । राजा साहब को मरहूम कहते हुये बड़ा रंजीदा महसूस कर रहा हूं । जिन्दगी और मौत बरहक हैं और इसलिये मानना पड़ता है कि शायद वह हमसे जुदा हो गये ।

मेरा उनसे सबसे पहले ताल्लुक १९५७ से हुआ । आई० पी० एल० पी० की पार्टी में वे भी एक नेता थे । और मैं भी उसी हैसियत से काम करता था । मैंने यह महसूस किया कि शायद वे नाम के ही राजा थे वरना वे दानिशमंद आदमी थे । वे एक बहुत बड़ा दिल रखते थे । अपनी जिम्मेदारी अपने छोटों पर न रखकर अपने फरायज़ को पूरा करते थे और जो जिम्मेदारी उनकी हो उसको भी वे पूरा करते थे । हमको उनके साथ काम करके बड़ी खुशी होती थी । आज उनको अपने बीच में से उठ जाने पर हमें बड़ा सदमा हो रहा है । मैं अपनी तरफ से खासतौर पर उनके कदमों पर अपनी मोहब्बत के फूल पेश करता हूं और आपसे गुजारिश करता हूं कि हमारे दल और मेरी तरफ से उनके परिवार वालों के पास मोहब्बत भरी यादगार भेज देंगे ।

श्री शिब्बनलाल सक्सेना (जिला गोरखपुर)--

माननीय अध्यक्ष महोदय, पहली बार सन् १९३७ में जब मैं और राजा साहब सदन में चुनकर आये थे, मेरी उनसे भेंट हुई । तब से माननीय किदवई साहब के साथ वे और मैं एक साथ काम करते थे । उनके जिले में मैं कई बार गया । वे एक साधारण व्यक्ति नहीं थे । राजा वे जरूर कहलाते थे, पर वे बहुत सादगी से रहते थे । उनका असर जितना देहातों में और जनता में मैंने देखा वैसा हर एक का नहीं होता है । उनको पिछले २५ वर्षों से जानते हुये भी मैं समझता हूं कि मैंने बहुत कम ऐसे लोग देखे जिनमें देश प्रेम इतना अधिक हो । यद्यपि वे स्वतंत्र पार्टी में थे पर उनकी देश के प्रति, गरीबों के प्रति, किसानों के प्रति और मजदूरों के प्रति जो भावनाएं थीं, उनकी मैं बहुत कद्र करता हूं । मुझे बहुत दुःख है कि ऐसा नेता हमारे बीच में से आज चला गया । मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी के दोनों अन्य नेताओं की ओर से उनके परिवारों के प्रति समवेदना प्रकट करता हूं और आशा करता हूं कि भगवान उनको शक्ति देगा कि वे इस भारी दुःख को सहन कर सकें ।

श्री अध्यक्ष--

मैं अपने आपको आपकी भावनाओं से सम्बद्ध करता हूं । हम में से बहुत से ऐसे हैं कि जो उनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित थे और आज यह वेदना, उनके उठ जाने से, जितनी उनके परिवार को हुई है उतनी ही उन लोगों के हृदय में है, जो उनसे परिचित थे । उनके सौजन्य, उनकी सौम्यता, उनकी उदारता, उनकी सहानुभूति, उनके मिलने का तौर-तरीका ऐसा प्रिय था कि उनको जानने से ही मनुष्य उनके हो जाते थे । इतने बड़े ताल्लुकेदार वंश में जन्म लेकर जिनका लालन-पालन इतने माधुर्य, इतने मृदु वातावरण में हुआ हो, और जो कौल्विन ताल्लुकेदार स्कूल में पढ़े हों उस जमाने में, और फिर जिसने लन्दन में जाकर यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त की हो, उसने लौट कर

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

ताल्लुकेदार वंश के लिये, एक उदाहरण प्रस्तुत किया कि किस तरह से मानव अपनी सारी सुख सुविधाओं को न्योछावर करके देश के लिए अपने आपको समर्पित कर सकता है ।

जितनी बातें यहां कही गयी हैं उनको दोहराने की आवश्यकता नहीं है । इतना कह देना पर्याप्त होगा कि उनकी अकाल मृत्यु से हमारे इस सदन की और हमारे प्रदेश तथा राज्य की बड़ी भारी क्षति हुई है और मैं अपने आपको इस आदरणीय सदन के द्वारा व्यक्त भावनाओं से सम्बद्ध करके इस सदन की समवेदना उनके परिवार को भेज दूंगा ।

अब हम एक मिनट खड़े होकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे ।

(सब सदस्य एक मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर खड़े हुए ।)

श्री अध्यक्ष--

अब हम उठते हैं और परसों १० बजे बैठेंगे ।

(इसके बाद सदन ११ बजकर ३१ मिनट पर शनिवार, २८ मार्च, १९६४ के १० बजे दिन तक के लिये स्थगित हो गया ।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

लखनऊ:
२६ मार्च, १९६४ ।

विधान सभा प्रदेश

पी० एस० यू० पी०--ए० पी०--१९ एल० ए०--१९६४--(प्रो०)--८८५ ।